बबूल का वैज्ञानिक नाम बदला

डॉ. किशोर पंवार

यह दुनिया तरह-तरह के पेड़-पौधों एवं जीव जन्तुओं का घर है। इन्हीं में हम भी हैं। मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह अपने आसपास की वस्तुओं को नाम देता है। झील, झरने, नदी, पहाड़, चिड़िया, चौपाए, झाड़, झाड़ी, घास-फूस और बबूल आदि। इसके बाद वह चीज़ों को व्यवस्थित रूप से जमाना चाहता है, वर्गीकृत करना चाहता है। उसका यह काम जीव-जन्तुओं के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करने में उपयोगी होता है।

पेड़-पौधों और जन्तुओं के वैज्ञानिक नाम देने की शुरुआत पश्चिम से हुई थी। पश्चिमी विद्वानों की भाषा लेटिन थी। वे अपने वैज्ञानिक लेखों में इसी का उपयोग करते थे। अतः वे जीवों को लेटिन नाम देते थे। जैसे गुलदाउदी का वैज्ञानिक नाम *डायएन्थस फ्लोरिबस सोर्लटेरिस स्क्वेमिस केलिसिनिस सबऑवेटिस कोरोलिस क्रिनेटिस* है। इसमें आठ विशेषण हैं। ऐसे नामों को पोलीनामियल कहा जाता है।

नामकरण की इस समस्या को देखते हुए कार्ल लीनियस ने द्विनाम पद्धति को बढ़ावा दिया। उन्होंने प्रत्येक पौधे को दो शब्दों से बने नाम दिए। जैसे *मेंगीफेरा इंडिका*। इसमें प्रथम पद उसका वंश है और दूसरा स्पेसिफिक अर्थात उसकी विशेषता बतलाने वाला विशेषण है। अर्थात वह मैंगो जो भारत में पाया जाता है। जैसे *आर्जीमोन मेक्सीकाना* यानी मेक्सिको में पाया जाने वाला आर्जीमोन (पीली कंटीली)। पीली कंटीली हमारे देश में भी पाई जाती है। परन्तु यह प्राकृतिक रूप से मेक्सिको का पौधा है। ऐसे नाम के दो हिस्से हैं। पहला शब्द उसका वंश है और दूसरा (विशिष्ट) शब्द विशेषण है। जैसे *सोलेनम ट्यूबरोसम* में सोलेनम तो वंश है और ट्यूबरोसम उसकी विशेषता है अर्थात ऐसा सोलेनम जिसमें ट्यूबर (कंद) पाए जाते हैं। यह आलू का वैज्ञानिक नाम है। *सोलेनम नायग्रम* (मकोय) अर्थात ऐसा सोलेनम जिसके फल काले रंग के होते हैं।

अकेसिया निलोटिका अर्थात नील नदी के किनारे उगने वाले *अकेसिया*। इसे हम बबूल के नाम से जानते है। दरअसल यह पेड़ अमेरिका का मूल निवासी है और वहां नील नदी के किनारों पर प्राकृतिक रूप से उगता है। परन्तु वर्तमान में यह पेड़ भारत में सड़कों के किनारे वृक्ष के रूप में उगाया जाता है। खेतों में आम के साथ बबूल के पेड़ ज़रूर मिलते हैं। वैसे वर्तमान में शहरों के आसपास इनका स्थान युकेलिप्टस, गुलमोहर, ऑस्ट्रेलियन *अकेसिया* आदि पेड़ों ने ले लिया है परन्तु ग्रामीण अंचलों में आज भी आम, नीम और बबूल की बहार देखी जा सकती है। तीनों पेड़ बहुउपयोगी और बेमिसाल हैं।

वनस्पति विज्ञान पढ़ा तो पता चला कि इस कांटे वाले बबूल का वैज्ञानिक नाम *अकेसिया अरेबिका* है। इसके गोंद को गम अरेबिक कहा जाता है जो बचपन में फटी कॉपी-किताबों और पतंगों को चिपकाने के काम आता था। कुछ किताबों में *इसे अकेसिया अरेबिका इंडिका* भी कहा गया है। काली छाल, पीले फूल और छमछम करती इसकी फलियां जिसकी गांवों में लड़कियां कभी पायल पहना करती थीं। इसका वैज्ञानिक नाम *अकेसिया अरेबिका* मन में रच-बस गया है। आगे की पढ़ाई में *अकेसिया* (खेजड़ा) और

अकेसिया केटेचू (कत्था) से भी मुलाकात हुई।

बबूल *अकेसिया* से यह जान-पहचान बड़ी पुरानी है। बबूल को *अकेसिया* नाम कार्ल लीनियस ने सन 1773 में दिया था। और बबूल की जिस टहनी को यह नाम दिया गया था वह नमूना आज भी अफ्रीका के वनस्पति संग्रहालय में रखा है। डिस्कवरी चैनल पर दिखाई जाने वाली अफ्रीकन डॉक्यूमेंटरी का आइकन पहचान चित्र है ढलता सूरज और *अकेसिया* के पेड़।

परन्तु हाल ही में प्रदीप कृष्ण की एक किताब 'जंगल ट्रीज़ ऑफ सेंट्रल इंडिया' पढ़ी तो पता चला कि *अकेसिया* का नाम तो बदल गया है, अब वैज्ञानिक जगत में इस *वेचीलिया निलोटिका* कहा जाएगा। *अकेसिया अरेबिका* का एक और पर्यावाची *अकेसिया निलोटिका* तो सुना था पर यह *अकेसिया* ही नहीं रहा यह पढ़कर तो माथा ठनक गया। मामले की जांच पड़ताल की तो पता चला कि यह आणविक जीव विज्ञान की करतूत है। पहले के सभी वैज्ञानिक नाम पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं को उनके आकार, रंग, रूप, आवास, महत्व आदि के आधार पर दिए गए हैं। यानी जो दिखा वह कह दिया। परन्तु वर्तमान में तो आणविक जीव विज्ञान का ज़माना है। ऐसे में विज्ञान की पुरानी शाखाएं आकारिकी, कार्यिकी आदि कहां टिकेंगी।

दरअसल वनस्पति विज्ञानी यह बात बहुत पहले से ही जानते थे कि वंश *अकेसिया* बहुत बड़ा वंश है। इसमें लगभग 1350 प्रजातियां शामिल हैं। इसकी कई प्रजातियों में समानता नहीं है और इनका कोई एक साझा पूर्वज नहीं लगता। इसी आधार पर *अकेसिया* को पांच उपवंशों में बांटा जाता रहा है।

आधुनिक आणविक जीव विज्ञान इस बात की पुष्टि करता है। अतः इस शोध के आधार पर *अकेसिया* वंश को अलग-अलग वंशों में बांटने का फैसला उनके जैविक विकास के सही सम्बंधों के आधार पर किया गया है। यह शुरुआत 2005 में वियेना में आरहूस वनस्पति विज्ञान कांग्रेस से हुई थी। इस कांग्रेस में *अकेसिया* नाम ऑस्ट्रेलियन प्रजाति के पौधे (जिन्हें वेटल्स के नाम से जाना जाता है) को दे दिया गया।

इस निर्णय से अफ्रीकन वनस्पति शास्त्रियों में हड़कंप मच गया है। उन्हें *अकेसिया* वंश पर अपना अधिकार छिनता लगा। यह भी सच है कि *अकेसिया* का नमूना पौधा अफ्रीकन पौधा है। उनका यह भी कहना है कि *अकेसिया* का अर्थ ही कांटेदार पौधा होता है जबकि ऑस्ट्रेलियन वेटल्स जिन्हें *अकेसिया* के नाम से पुकारा जाना तय है उसमें कांटे होते ही नहीं है।

इसी तरह के दावे-प्रतिदावे एवं तर्क मेलबर्न में 2011 में आयोजित वनस्पति विज्ञान संगोष्ठी में भी दिए गए। ऑस्ट्रेलियाई वैज्ञानिकों का कहना था कि वेटल्स के फूल ऑस्ट्रेलिया का प्रतीक चिन्ह है। वहीं अफ्रीकन वनस्पति शास्त्रियों का कहना था कि डूबते सूरज के साथ चपटे शीर्ष वाले *अकेसिया* के चित्र अफ्रीकन सवाना की पहचान हैं।

खैर अंततः तय यही हुआ कि *अकेसिया* वंश ऑस्ट्रेलियन पौधों के लिए होगा और अफ्रीका के *अकेसिया* अब एक नए वंश के नाम से जाने जाएंगे। तो अब हमारा *अकेसिया अरेबिका* या *अकेसिया निलोटिका* अब *वेचीलिया निलोटिका* के नाम से जाना जाएगा।

इसी तरह कत्थे का पेड़ जिसे *अकेसिया केटेचू* कहते थे अब *सेनागेलिया केटेचू* कहलाएगा। उल्लेखनीय है कि सेनेगल एक अफ्रीकी देश है। यहां संतोष यह है कि वंश बदल गया पर प्रजाति का नाम वही है केटेचू। खैर वृक्ष को मलयाली भाषा में कच्चू कहते हैं, यह लेटिन में केटेचू हो गया।

इस पूरे घटनाक्रम के बारे में रूपर्ट वॉटसन का कहना है कि यह सही है कि अफ्रीका *अकेसिया* को लेकर यह युद्ध हार गया है मगर अफ्रीका में इन पेड़ों को आने वाली कई पीढ़ियां *अकेसिया* के नाम से पुकारती रहेंगी।

कमोबेश यही स्थिति हमारे यहां भी बनी रहेगी। हमारा चिर-परिचित बबूल भले ही वैज्ञानिक जगत में *वेचेलिया निलोटिका* हो गया हो, हमारे दिलों में, हमारी किताबों में, हमारे वनस्पति संग्राहलयों तक में यह *अकेसिया निलोटिका* ही रहेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***